धूल भी सिर चढ़ती है

संकलित

धूल की सबसे बड़ी ख़ासियत है - उसकी नम्रता । अर्थात् बेचारी जहाँ तहाँ पड़ी रहती है। लेकिन एक बार उस पर लात जमा दो तो फिर देखो । वह सिर पर चढ़ कर बोलती है । इसी प्रकार सबसे दीन, नम्र, भद्र और भीरू भी छेड़-खानी करने पर फुफकार उठता है । वैसी ही बात संसार के एक बड़े महात्मा के साथ हुई ।

यह घटना दक्षिण अफ्रीका मे घटी । एक साफ-सुथरे सभ्य मनुष्य टिकट लेकर रेल की प्रथम श्रेणी में चढ़ रहे थे । लेकिन वहाँ पहले से विराजमान कई श्वेतांग लोगों ने उन्हें डिब्बे में घुसने नहीं दिया । कारण था कि वे गोरे यूरोपीय थे । ये काले थे, भारतीय थे । गोरे लोगों ने बलपूर्वक उन्हें निकाल दिया । रातभर जाड़े पाले में स्टेशन पर बैठे-बैठे उस भद्र आदमी ने तय किया- उस 'नाइंसाफ़ी के खिलाफ़ लड़ेंगे । नम्र व्यक्ति विद्रोही हो चला । यह व्यक्ति आगे चलकर महात्मा गांधी के नाम से मशहूर हुए । उन्होंने बिना किसी हथियार के भारत को स्वतंत्रता दिलाई। दक्षिण अफ्रीका में ही आजादी की क्रान्ति मचा दी ।

मोहनदास करमचन्द गांधी का जन्म 1869 अक्तूबर 2 तारीख को गुजरात के पोरबंदर में हुआ । पिता करमचन्द उस राज्य के दीवान थे । माता पुतलीबाई एक सरल सीधी, धार्मिक महिला थी । मोहनदास बचपन में बड़े तेज होनहार छात्र नहीं थे । लेकिन सदा सच बोलते थे । नम्र, और भद्र थे । कुछ दिन बाद वे बैरिस्टरी पढ़ने 18 सालकी उम्र में ही विलायत गए । वहाँ से वापस आकर मुंबई में वकालत की । फिर एक कंपनी के अनुरोध से दक्षिण अफ्रीका गए थे ।

जब गांधी अफ्रीका छोड़कर 1915 में भारत आए, तब तक उनके सारे सद्गुण विकसित हो चुके थे । लोग उन्हें 'महात्मा' कहने लगे थे । बाद में रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने उन्हें औपचारिक रूप में 'महात्मा' की पदवी से विभूषित किया था ।

1914-18 में प्रथम विश्व युद्ध चल रहा था । गाँधीजी ने अंग्रेजों का पक्ष लिया । यहाँ तक कि ब्रिटिश सेना में शामिल होने को लोगों से कहा । उन्हें विश्वास था कि युद्ध समाप्त होने पर अंग्रेज शासक भारतीयों को प्रशासन में कुछ सहुलियत देंगे । लेकिन अंग्रेजों ने भारतीयों को कुछ दिया तो नहीं, उल्टे उनके भविष्य के कार्यक्रम में शक जाहिर किया ।

1918 में रौलट एक्ट बना । उसमें भारतीयों के साथ काफी कड़ाई बरतने के लिए कानून बनाये गए। 1917 में रूसी क्रान्ति हो चुकी थी । उसमें रूस की जनता की जीत हुई । अंग्रेजों ने सोचा भारत पर उसका असर पड़ेगा । भारतीय ज्यादा विद्रोही हो जाएँगे । इनको सख्त कानूनी जंजीरों में पकड़कर रखो। लेकिन फल उल्टा हुआ । रौलट एक्ट के ऊपर गांधीजी का विचार था–

मैं इस बिल को हमारे ऊपर सीधा हमला मानता हूँ । हम दब जाएँगे तो निःशेष हो जाएँगे । उन्हेंने पहली बार सारे देश में हड़ताल कराई । सफल हुए ।

1919 जालियाँवाला बाग में बर्बर हत्याकांड हुआ । फिर मंटेगू–चेम्सफोर्ड़ संस्कार का कानून आया । लेकिन इससे कोई संतुष्ट नहीं हुआ । गांधीजी कोई बड़ा–सा आन्दोलन छेड़ना चाहते थे । 1920-22 में असहयोग आन्दोलन के तहत अंग्रेजों के किसी भी कार्यक्रम में गांधीजी और उनके साथियों ने भाग नहीं लिया । 1928 में साइमन कमीशन आया तो उसका विरोध हुआ । फिर 'पूर्ण स्वराज्य' का प्रस्ताव अंग्रेजों को दिया गया । 1930 से कानून को तोड़ने का आन्दोलन चला । नमक आन्दोलन में गांधीजी ने भाग लिया। नमक बनाने के लिए अंग्रेज–शासकों ने निषेध किया था, उस कानून को गांधीजी ने तोड़ा । 1931 में गांधी–इरविन करार हुई । 1935 में भारत प्रशासनिक कानून बना । 1937 में कांग्रेसी मंत्रिमंडल बना ।

लेकिन गांधीजी का मन ही भारत की राजनीतिक सामाजिक, आर्थिक अवनति की ओर लगा था । उनकी पत्नी कस्तुरबा, गांधीजी के हर काम में हाथ बँटा रही थी । गांधीजी ने देश के हर तबके के लोगों को स्वतंत्रता आन्दोलन में शामिल कराया । महिलाएँ आगे आईं, दलित जातियाँ स्वाभिमानपूर्वक जीवन जीने लगीं । किसान, मजदूर, विद्यार्थी, वकील, डॉक्टर, नौकरी पेशेवाले सब मिलकर इस आन्दोलन में कूद पड़े । 1942 में 'भारत छोड़ो' का नारा लगा । यह एक अद्‌भूत क्रांति थी । लोग सीने पर गोली खाने को तैयार हुए, कई जगह लाठी गोली चली, बहुत आत्याचार हुए । लेकिन भारतीयों की सहन-शक्ति ब्रिटिशों के अत्याचार को निगल गई । 1947 को देश स्वतंत्र हुआ। गांधीजी को 'राष्ट्र-पिता' का सम्मान मिला ।

गांधीजी ने साबरमती और वर्धा में (सेवाग्राम) आश्रम बनाए । सत्य, अहिंसा, सत्याग्रह, खादी बुनना, पहनना, घरेलू उद्योग का प्रोत्साहन आदि अनेक कार्यक्रम चलाऐ। पत्रिकाओं का संपादन किया, 'सत्य के साथ मेरी परीक्षा' जैसे विश्वप्रसिद्ध ग्रंथ लिखा । जवाहरलाल नेहरू और बल्लभ भाई को शासन का बागडोर सौंपा । वे अलग पाकिस्तान बनने से बहुत दुःखी हुए । हिन्दू और मुसलमानों में भाईचारा बढ़ाने का प्रयत्न किया । अहिंसा उनका मूलमंत्र था ।

पर दुर्भाग्य से अहिंसा पर हिंसा की विजय हो गई । 1948 को गांधीजी की हत्या कर दी गई । नेहरू ने भरे गले से कहा-

'हमारा मशाल बुझ गया । अब हम अँधेरे में टटोल रहे हैं ।'

सच में, हमारी (भारत की) ही नहीं दुनिया की रोशनी बुझ गई । महात्मा गांधी शहीद हो गए ।